# गोपू का नौला

गोपू ने कहा, "ईजा आज क्या बना रही है ? बहुत अच्छी खुशबू आ रही है।" ईजा ने कहा, "भट्ट के डुबके और भात। लगता है तू भूखा है ।" "हाँ ईजा। जल्दी दो। मुझे फिर बहुत काम हैं।" "अरे! गोपू तू बड़ा समझदार हो गया है।" "हाँ ईजा आज मुझे गाँव के नौले की सफाई करनी है। चौड़ी पत्ती के पेड़ लगाने हैं।

जिससे नौले को सूखने से बचा सकूँ।"

खाना खाकर गोपू घर से निकल गया।

ईजा ने कहा, –'' गोपू तू अकेला नहीं है। मैं भी तेरे साथ चलूँगी।"

ईजा के पीछे–पीछे पूरा गाँव चल दिया। सबने मिलकर गाँव के नौले की सफाई की और चौड़ी पत्ती के पेड़ लगाये।

कुछ महीनों बाद नौला पानी से छलछला रहा था।

गुरूजी ने भी गोपू को इस कार्य के लिए शाबासी दी।

ईजा : माँ

राज्य परियोजना कार्यालय
सर्व शिक्षा अभियान उत्तराखण्ड, देहरादून।

कविता : **सोनू उप्रेती**, स. अ.
चित्राकंन : **राजेन्द्र लाल**, प्रवक्ता